SHRI A. C. GUHA: As far as the advisory committee is concerned, I would like to have notice.

SHRI H. C. DASAPPA: What are the financial implications of this recommendation?

SHRI A. C. GUHA: I do not think the financial implication is big. In any case, it is only a question of attaching the National Income Unit, which is already there in the Economic Section of the Ministry of Finance, to the Central Statistical Organisation.

*549. [*The questioner (Shri J. V. K. Vallabharao) was absent. For answer,* vide *cols.* 4973-74 infra.]

PRIZES FOR BEST HINDI BOOKS

*550. SHRIMATI CHANDRAVATI LAKHANPAL: Will the Minister for EDUCATION be pleased to state:

(a) the year in which the prizes worth Rs. 29,000 for the best Hindi books referred to at page 4 of the brochure entitled "Programme for the development and propagation of Hindi" were instituted; and

(b) the number of books which have so far been received from the contestants for these prizes?

THE PARLIAMENTARY SECRETARY TO THE MINISTER FOR EDUCATION (DR. K. L. SHRIMALI): (a) 1952.

(b) 402.

श्रीमती चन्द्रवती लखनपाल : ये पुरस्कार कितने हैं और किस साल के लिए घोषित किए गए हैं ?

†[SHRIMATI CHANDRAVATI LAKHANPAL: What is the number of these prizes and for which year have they been announced?]

DR. K. L. SHRIMALI: The announcement was made in 1952. There are three prizes of Rs. 3,000 each for the best translations into Hindi from other languages; there are four prizes of Rs. 2,500 each for the best translations from other languages into Hindi of text-books; three prizes of Rs. 3,000 each for original work in poetry, drama, fiction and general literature and one prize of Rs. 1,000 for the best book in Hindi in the field of children's literature.

श्रीमती चन्द्रवती लखनपाल : ये इनाम किस साल के लिए घोषित किए गए ?

†[SHRIMATI CHANDRAVATI LAKHANPAL: For which year have these prizes been announced?]

DR. K. L. SHRIMALI: As I said, the announcement was made in 1952, but I expect that the prizes will be awarded this year.

श्रीमती चन्द्रवती लखनपाल : मेरा प्रश्न यह है कि ये जो इनाम रखे गए हैं वे किस साल के लिए रखे गए हैं, यानी १९५२-५३ के लिए रखे गये हैं या १९५४ तक के लिये ?

†[SHRIMATI CHANDRAVATI LAKHANPAL: My question is: For which year are these prizes intended? Are they intended for 1952-53 or for the period extending to 1954?]

श्री वी० के० धगे : सिर्फ़ एक दफ़ा के लिए ।

†[SHRI V. K. DHAGE: They will be awarded only once.]

डा० के० एल० श्रीमाली : मैं आपसे निवेदन करता हूं कि १९५२ में इनाम घोषित किए गए थे ।

†[DR. K. L. SHRIMALI: I submit, Sir, that the prizes were announced in 1952.]

डा० डब्ल्यू० एस० बार्लिंगे : किस किस को अभी तक पुरस्कार दिये जा चुके हैं ?

†English translation.

†[DR. W. S. BARLINGAY: What are the names of the persons to whom the prizes have been given so far?]

श्रीमती सावित्री निगम : श्रीमन्, क्या मैं जान सकती हूं कि किन किन विषयों पर ये पुस्तकें प्रतियोगिता के लिए आई हैं ?

†[SHRIMATI SAVITRY NIGAM: Sir, may I know the subjects of books received for competition?]

डा० के० एल० श्रीमाली : मैंने आपसे निवेदन किया कि ये हिंदी की पुस्तकें ह और जिन भिन्न भिन्न विषयों पर पुस्तकें मंगवाई गई हैं उनका उल्लेख भी मैंने क दिया हैं ।

†[DR. K. L. SHRIMALI: I have already stated that these were Hindi books and I have also mentioned the various subjects on which books were invited.]

श्री डी० नारायण : क्या ऐसे लोगों की भी पुस्तकें रखी गई हैं जिनकी मातृभाषा हिंदी नहीं है और उनके लिए कोई खास इनाम रखे गए हैं ?

†[SHRI D. NARAYAN: Have those persons, whose mother tongue is not Hindi, also been asked to send books and have any special prizes been set aside for them?]

डा० के० एल० श्रीमाली : खाली हिंदी में पुस्तकें रहेंगी ।

†[DR. K. L. SHRIMALI: Only Hindi books will be asked for.]

श्री डी० नारायण : नहीं, मेरा सवाल यह है कि जिनकी मातृभाषा हिंदी नहीं है उन्होंने अग हिंदी में पुस्तकें लिखी हैं तो उसके लिए कोई खास व्यवस्था की गई है ।

†[SHRI D. NARAYAN: No. My question is whether any special provision has been made for those persons who have written books in Hindi but whose mother tongue is not Hindi.]

डा० के० एल० श्रीमाली : मैं इस प्रश्न को समझ नहीं सका । मैं निवेदन कर चुका हूं कि ये पुस्तकें हिंदी में लिखी जायेंगी । इस बात का ख्याल तो नहीं रखा गया कि किसकी मातृभाषा हिन्दी है किसकी नहीं । जो सर्वश्रेष्ठ पुस्तकें होंगी उन पर पुरस्कार दिये जायेंगे ।

†[DR. K. L. SHRIMALI: I could not follow this question. I have already submitted that these books will be written in Hindi. No consideration will be shown to the fact that the mother-tongue of the writer is Hindi or some other language. Prizes will be awarded for the best books.]

श्रीमती चन्द्रवती लखनपाल : साधारणतया यह नियम होता है कि जो पुरस्कार घोषित किये जाते हैं वे एक साल के लिए होते हैं । इन पुरस्कारों को घोषित हुए दो साल हो चुके हैं । मैं मंत्री महोदय से पूछना चाहती हूं कि पुरस्कारों के दिये जाने में इतनी देरी क्यों हुई ।

†[SHRIMATI CHANDRAVATI LAKHANPAL: Generally, the rule is that the prizes which are announced are intended for a year. Two years have elapsed since these prizes were announced. I want to ask the hon. Minister why the award of prizes has been delayed so much.]

डा० के० एल० श्रीमाली : इसका कारण यह है कि हमें कुल ४०२ किताबें प्राप्त हुई थीं जिनकी स्क्रुटनी (scrutiny) करनी थी और उसके बाद जजेज़ (judges) नियुक्त करने थे ।

†English translation

जजेज़ नियुक्त करने में हमने इस बात की कोशिश की कि हिन्दुस्तान में जो सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति हों उनको जजेज़ नियुक्त किया जाय । तो हमने इसके लिए कई लोगों से निवेदन किया, लेकिन उन्होंने इन्कार कर दिया । उसके बाद काफ़ी वक्त लग गया । अब पुस्तकें सेलेक्शन (selection) के लिए तैयार हैं केवल एक दो जजेज़ की स्वीकृति बाक़ी रह गई है ।

†[DR. K. L. SHRIMALI: The reason is that we had to scrutinize 402 books which were received and then we had to appoint the judges. While appointing the judges we tried to select the best persons in India. Therefore, we requested many persons to act as judges, but they did not agree. That took a long time. Now the books are ready for selection. Acceptance of our offer by one or two judges is awaited.]

श्री डी० नारायण : क्या योजना का मंतव्य यह नहीं है कि जिनकी मातृ भाषा हिन्दी नहीं है, उनकी भी पुस्तकें पुरस्कार के लिए ली जायें ।

†[SHRI D. NARAYAN: Is it not the object of the scheme that the books of those persons also whose mother tongue is not Hindi, should be accepted for the award of prizes?]

डा० के० एल० श्रीमाली : योजना का मुख्य उद्देश्य यह है कि हिन्दी को प्रोत्साहन दिया जाये । इस बारे में भेद-भाव नहीं किया जा सकता है कि किसी की मातृभाषा हिन्दी है या नहीं । केवल सर्वश्रेष्ठ पुस्तकों पर पुरस्कार दिये जायंगे ।

†[DR. K. L. SHRIMALI: The main object of the scheme is to encourage Hindi irrespective of the fact whether the mother-tongue of the writer is Hindi or not. The prizes will be awarded for the best books only.]

डा० रघुबीर सिंह : ये पुस्तकें जो आपके यहां पुरस्कार के लिए आईं; क्या ये लेखकों ने भेजी हैं या गवर्नमेंट (Government) ने भी मंगवाईं ।

†[DR. RAGHUBIR SINH: Have the books received for award of prizes been sent by the writers themselves or have Government also asked for them?]

डा० के० एल० श्रीमाली : गवर्नमेंट ने उसके लिए घोषणा की थी जिस पर लेखकों ने अपनी पुस्तकें भेजीं ।

†[DR. K. L. SHRIMALI: Government made an announcement in response to which the writers sent their books.]

श्री एच० पी० सक्सेना : क्या इनमें से कुछ किताबें ऐसी भी हैं जो आगे चल कर टेक्स्ट बुक्स (text books) का काम दे सकें ?

†[SHRI H. P SAKSENA: Are there any books among these, which may serve the purpose of text-books in future?]

डा० के० एल० श्रीमाली : जी हां । कुछ पुस्तकें ऐसी भी हैं जो टेक्स्ट बुक्स का काम दे सकती हैं । ऐसी पुस्तकों के लिए हमने २,५०० रुपये के चार पुरस्कार रखे हैं । इनमें हिस्ट्री (history), ज्योग्रफी (geography), सिविक्स (civics) आदि की पुस्तकें शामिल हैं ।

†[DR. K. L. SHRIMALI: Yes, Sir, there are a few books which can serve the purpose of text-books. We have

†English translation.

fixed four prizes of Rs. 2,500 for such books. They include books on history, geography, civics, etc.]

श्री कृष्णकान्त व्यास : क्या मैं यह जान सकता हूं कि किस किस प्रान्त से कितनी पुस्तकें आई ?

†[SHRI KRISHNAKANT VYAS: May I know the number of books received from each State?]

डा० के० एल० श्रीमाली : इसका लेखा मेरे पास इस समय नहीं है ।

†[DR. K. L. SHRIMALI: I have no such figures at the moment.]

डा० डब्ल्यू० एस० बार्लिंगे : भारतीय भाषाओं में जो अच्छी अच्छी पुस्तकें यानी क्लासिक्स (classics) हैं उनके भाषान्तर के लिए भी आपने कोई योजना की है या पुरस्कार रखे हैं ?

†[DR W. S. BARLINGAY: Have you prepared any scheme or fixed any prize for translating good books of Indian languages, that is classics?]

डा० के० एल० श्रीमाली: जी हां । ट्रांसलेशन्स (translations) के लिए भी हमने पुरस्कार रखे हैं ।

†[DR. K. L. SHRIMALI: Yes, Sir. We have fixed prizes for translations also.]

श्री ओंकारनाथ : क्या जजेज़ के नाम आप बता सकेंगे ।

†[SHRI ONKAR NATH: Will you be pleased to tell the names of the judges?]

MR. CHAIRMAN: Are they confidential or are they public?

DR. K. L. SHRIMALI: No, Sir, they are not confidential. There are three committees, one for categories (1) and (2)—poetry, drama, fiction and general literature, and text-books—consisting of Kakasaheb Kalelkar, Shri B. D. Chaturvedi and Shri Janiendra Kumar; committee No. 2 for category (3) consists of Kakasaheb Kalelkar, Shri S. S. R. Naidu and Pandit Sunderlal; committee No. 3 for category (4) consists of Pandit Sunderlal, Shri Hamid Ali Khan and Mrs. Perin Captain.

डा० डब्ल्यू० एस० बार्लिंगे : क्या आप यह बता सकेंगे कि मराठी में जो क्लासिक्स हैं उनमें से किसी क्लासिक के बारे में भाषान्तर करने की कोई योजना आपके यहां की गई है ?

†[DR. W. S. BARLINGAY: Will you please state whether there is any scheme for translating any of the classics of Marathi language?]

डा० के० एल० श्रीमाली : मराठी में भाषान्तर करने का कोई खास योजना तो नहीं है ।

†[DR. K. L. SHRIMALI: There is no special scheme for the translation of Marathi books.]

*551. [*The questioner (Prof. R. D. Sinha Dinkar) was absent. For answer*, vide cols. 4974-75 infra.]

*552. [*The questioner (Prof. R. D. Sinha Dinkar) was absent. For answer* vide *cols* 4975-76 infra.]

राज्यों को आर्थिक सहायता

*५३८. **श्री प्र० चं० भञ्जदेव की ओर से श्री न० सिं० चौहान** : क्या वित्त मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या २९ दिसम्बर, १९५३ को, आर्थिक परिस्थिति का वार्षिक सिंहावलोकन करते समय उन्होंने यह

†English translation.

फ़रमाया था कि आयन्दा राज्यों को केन्द्रीय सरकार द्वारा दी जाने वाली आर्थिक सहायता केवल ब्याजमुक्त कर्जों तक ही परिसीमित रहेगी ; और

(ख) यदि हां, तो क्या यह निर्णय गाडगिल समिति द्वारा अनुमोदित राजस्थान, पेप्सू तथा मध्यभारत राज्यों को दातव्य विशेष अनुदानों को भी रूपान्तरित करेगा ?

†[ECONOMIC AID TO STATES

*538. SHRI N. S. CHAUHAN (On behalf of SHRI P. C. BHANJ DEO): Will the Minister for FINANCE be pleased to state:

(a) whether, on the 29th of December 1953, while giving his end-of-the-year review of the economic situation, he stated that the economic aid to be given by the Central Government to the States in future would be limited to interest-free loans only; and

(b) if so, whether this decision would also alter the nature of the special grants recommended by the Gadgil Committee for the States of Rajasthan, PEPSU and Madhya Bharat?]

THE DEPUTY MINISTER FOR FINANCE (SHRI M. C. SHAH): (a) No, Sir.

(b) Does not arise.

श्री न० सिं० चौहान : सेंट्रल बजट में राज्यों के लिए सन् १९५४-५५ में जो २१४ करोड़ की रकम कर्ज के रुप में रखी गई है उसमें से कितना हिस्सा बगैर सूद के दिया जाने वाला है ?

†[SHRI N. S. CHAUHAN: Out of 214 crores of rupees provided in the Central Budget for loans to be given to the States during 1954-55 what amount will be interest-free?]

SHRI M. C. SHAH: I will refer the hon. Member to the Explanatory Memorandum. All the information that he requires is given in annexure VII on page 163.

श्री न० सिं० चौहान : राज्य सरकार से यह कर्जा वापस आ जाय, गवर्नमेंट ने इसके लिए क्या उपाय सोचा है ?

†[SHRI N. S. CHAUHAN: What plan Government have devised to recover loans from the States?]

SHRI M. C. SHAH: Of course, we expect the States to return all these loans given to them.

†रोकड़-बाकी-धन-विनियोजना लेखे के अन्तर्गत प्रतिभूतियां

***५४४. श्री प्र० चं० भञ्जदेव की ओर से श्री न० सिं० चौहान** : क्या वित्त मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि रोकड-बाकी-धन-विनियोजन लेखे के अन्तर्गत, १९४८ से १९५१ तक प्रति वर्ष ३१ मार्च को, कितने मूल्य की प्रतिभूतियां सरकार के हाथ में थीं ?

†[SECURITIES HELD ON CASH BALANCE INVESTMENT ACCOUNT

*544. SHRI N. S. CHAUHAN (On behalf of SHRI P. C. BHANJ DEO): Will the Minister for FINANCE be pleased to state the value of the securities held on the Cash Balance Investment Account of Government on the 31st March of each of the years from 1948 to 1951?]

THE DEPUTY MINISTER FOR FINANCE (SHRI M. C. SHAH): The face value of the securities held on the Cash Balance Investment Account amounted to—

Rs.	66,66	lakhs	on 31st March 1948
,,	45,37	,,	,, 31st March 1949
,,	47,30	,,	,, 31st March 1950
,,	23,74	,,	,, 31st March 1951

†English translation.